346 -

भर भादौं दूभर अति भारी ----
चनि जौबन औगाह महँ है बूड़त पिय टेक ॥

भादौं का महीना भर गया है। वह अत्यंत दुःसह और भारी है। अँधियारी रात कैसे पूरी करूँ? मन्दिर सूना करके प्रियतम अन्यत्र बसे हैं। सेज नाग होकर दौड़ दौड़ कर डसती है। एक पट्टी पकड़े मैं अकेले पड़ी रहती हूँ। नेत्र फैलाए हुए मैं हृदय फटने से मरी जा रही हूँ। बिजली चमक कर और मेघ गरज कर मुझे डराते हैं। विरह काल होकर प्राण ग्रास लेता है। मघा नक्षत्र झक झोर कर बरस रहा है। मेरे दोनों नेत्र ओरमती से चू रहे हैं। पूर्वा फाल्गुनी लग गया और धरती जल से भर गई। मैं सूखकर ऐसी हो गई, जैसे वर्षा में आक और जवास बिना पत्ते के हो जाते हैं। भरे भादों में भी बाला सूख रही है। हे स्वामी अब भी आकर क्यों नहीं सींचते?

ऊँचे स्थल भी जल से ऊपर तक भर गए हैं। धरती आकाश मिलकर एक हो गए हैं। हे प्रिय, यौवन के अगाध जल में डूबती हुई बाला को सहारा दो।

347-

लाग कुँआर नीर जग घटा ------
बेगि आइ पिय बाजहु गाजहु होइ सदूर -----

कुँआर लग गया। संसार में जल घटने लगा। हे प्रिय, परदेश में लट रहे हो। अब तो घर लौट आओ। हे प्रिय, तुम्हे देखकर मेरा सूखा शरीर फिर हरा होगा। अपना उतरा हुआ चित्त मेरी ओर करके आने की दया करो। अगस्त्य के उदय होने पर हस्त नक्षत्र का मेघ गरजने लगा। राजाओं ने घोड़ों पर पलान रखकर युद्ध की तैयारी की। चित्रा का मित्र चन्द्रमा मीन राशि में आ गया। कोयल ने पिऊ-पिऊ पुकारते हुए मानो अपना पीत पा लिया है तभी तो वह चुप हो गई है हे मेरे चित्त के मित्र, तुम भी अब तो घर आवो। स्वाति की बूँदे चातक के मुख में पड़ गई है। समुद्र में सीप मोतियों से भर गई है सरोवर का स्मरण कर हंस लौट आए सारस फिर कुरलने लगे और खंजन दिखाई देने लगे। सब ओर मैदानों में कास के वन फूले है। पर हे कंत, तुम विदेश में ऐसे भूले कि फिर न लौटे। विरह रूपी हाथी शरीर को कष्ट दे रहा है। वह खाकर इसे नष्ट कर देगा। हे प्रिय जल्दी आकर पँहुचो और विरह के सामने सिंह के समान गरजो।

348 -

कातिक सरद चंद उजियारी - - - - - - -
हौं का खेलौं कंत बिनु तेहिं रही छार सिर मेलि

कार्तिक में शरद के चन्द्रमा की उजाली छाई हुई है जगत शीतल है पर मैं विरह में जल रही हूँ। चौदह कलाओं से पूर्ण होकर चन्द्रमा ने प्रकाश किया है। मुझे जान पड़ता है जैसे धरती से आकाश तक सब जल रहा है। मेरे तन और मन में सेज अग्निदाह उत्पन्न करती है। सबके लिए जो चाँद है वह मेरे लिए राहु हो रहा है। जब घर में प्यारा कान्त नहीं, तो चारों दिशाओं में अँधेरा लगता है। हे निष्ठुर, अब भी इस दिन तो घर आ जाओ, जब कि संसार में दिवाली का पर्व मनाया जा रहा है। सखियाँ अंग मोड़-मोड़कर झूमक गा रही हैं। जिसकी जोड़ी बिछुड़ गई है ऐसी मैं ही खड़ी रही हूँ। जिसका प्रियतम घर पर है वह कार्तिकी पूनो को सखियों की पूजा करती है मुझे तो विरह और सौत का गहरा दुःख है

सब सखियाँ त्यौहार मना रही हैं और गीत-गाकर दिवाली में क्रीड़ा कर रही हैं। मैं कन्त के बिन क्या खेलूँ? इसी दुःख से मैं सिर में धूल डाल रही हूँ